अथ द्वादशोऽध्यायः

भक्तियोग

(श्रीभगवान् की प्रेममयी सेवा)

अर्जुन उवाच।
एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः।।१।।

अर्जुनः उवाच=अर्जुन ने कहा; **एवम्**=इस प्रकार; **सतत**=नित्य-निरंतर; **युक्ताः**=तत्पर; **ये**=जो; **भक्ताः**=भक्त; **त्वाम्**=आपको; **पर्युपासते**=भलीभाँति भजते हैं; **ये**=जो; **च**=तथा; **अपि**=भी; **अक्षरम्**=इन्द्रियों से अतीत; **अव्यक्तम्**=निराकार को; **तेषाम्**=उनमें; **के**=कौन; **योगवित्तमाः**=परम सिद्ध (हैं)।

अनुवाद

अर्जुन ने पूछा, हे कृष्ण! जो आपकी भक्ति के परायण हैं और दूसरे जो निराकार-निर्विशेष ब्रह्म की उपासना करते हैं, इन दोनों प्रकार के मनुष्यों में अधिक सिद्ध कौन हैं?।।१।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण साकार, निराकार और विश्वरूप का तथा सब प्रकार के भक्तों और योगियों का वर्णन कर चुके हैं। साधारण रूप में योगियों का साकारवादी और निराकारवादी—इन दो कोटियों में वर्गीकरण किया जा सकता है। साकारवादी भक्त अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ भगवत्सेवा के परायण रहते हैं। निराकारवादी सीधे